RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : MISC-I/CPM/09/KPHO/2014-17
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

जुलाई-2017 | वर्ष - 09 | अंक : 06 | मूल्य : 5/-

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (इं. जल संस्थान), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम हिन्दुस्तानी, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अमिल कुमार कन्नौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपावक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-नवीन मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0005307

पूना पैक्ट का मूल पाठ

समझौते का मूल पाठ निम्न प्रकार से था–

1. प्रांतीय विधानसभाओं में सामान्य निर्वाचित सीटों में से दलित वर्गों के लिए सीटें सुरक्षित की जाएंगी जो निम्न प्रकार होंगी।

मद्रास 30, बम्बई और सिंध मिला कर 15, पंजाब 8, बिहार एवं उड़ीसा 18, मध्य प्रांत 20, असम 7, बंगाल 30, संयुक्त प्रांत 20, कुल योग 148, ये संख्या प्रांतीय काउंसिलों में कुल सीटों की संख्या पर आधारित थी, जिन्हें प्रधानमंत्री ने अपने फैसले में घोषित किया था।

2. इन सीटों का चुनाव संयुक्त निर्वाचन प्रणाली द्वारा निम्नलिखित प्रक्रिया से किया जाएगा :

दलित वर्गों के सभी लोग जिनके नाम उस निर्वाचनक्षेत्र की मतदाता सूची में दर्ज होंगे, एक निर्वाचन मंडल में होंगे, जो प्रत्येक सुरक्षित सीट के लिए दलित वर्गों के चार अभ्यर्थियों का पैनल चुनेगा। वह चुनाव-पद्धति एकल मत प्रणाली के आधार पर होगी। ऐसे प्राथमिक चुनाव में जिन चार सदस्यों को सबसे अधिक मत मिलेंगे, वे सामान्य निर्वाचन के लिए उम्मीदवार माने जाएंगे।

3. केंद्रीय विधानमंडल में दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व उपरोक्त खंड 2 में उपबंधित रीति से संयुक्त निर्वाचन प्रणाली के सिद्धांत पर होगा और प्रांतीय विधानमंडलों में उनके प्रतिनिधित्व के लिए प्राथमिक निर्वाचन के तरीके द्वारा सीटों का आरक्षण होगा।

4. केंद्रीय विधानमंडल में अंग्रेजी राज के तहत सीटों में से दलित वर्गों के लिए सुरक्षित सीटों की संख्या 18 प्रतिशत होगी।

5. उम्मीदवारों के पैनल की प्राथमिक चुनाव व्यवस्था केंद्रीय तथा प्रांतीय विधानमंडलों के लिए जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है प्रथम दस वर्ष के बाद समाप्त हो जाएगी। दोनों पक्षों की आपसी सहमति पर निम्नलिखित पैरा 6 के अनुसार इसे पहले भी समाप्त किया जा सकता है।

6. प्रांतीय तथा केंद्रीय विधानमंडलों में दलितों के लिए सीटों का प्रतिनिधित्व, जैसा कि ऊपर खंड 1 और 4 में दिया गया है, तब तक जारी रहेगा, जब तक कि दोनों संबंधित पक्षों में आपसी समझौते द्वारा उसे समाप्त करने पर सहमति नहीं हो जाती।

7. केंद्रीय तथा प्रांतीय विधानमंडलों के चुनाव के लिए दलितों को मतदान का अधिकार उसी प्रकार होगा जैसा लोथियन समिति की रिपोर्ट में कहा गया है।

8. दलित वर्गों के सदस्यों को स्थानीय निकायों के चुनावों तथा सरकारी नौकरियों में अस्पृश्य होने के आधार पर अयोग्य नहीं ठहराया जाएगा। दलितों के प्रतिनिधित्व को पूरा करने के लिए सभी तरह के प्रयत्न किए जाएंगे और सरकारी नौकरियों में उनकी नियुक्ति निर्धारित शैक्षिक योग्यता के अनुसार की जाएगी।

9. सभी प्रांतों में शैक्षिक अनुदान से उन दलितों के बच्चों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए समुचित धनराशि नियत की जाएगी।

समझौते की शर्तें श्री गांधी ने मान ली और उनको भारत सरकार के अधिनियम में शामिल कर लिया गया। पूना पैक्ट पर विभिन्न प्रतिक्रियाएं हुईं। अस्पृश्य दुखी थे। ऐसा होना स्वभाविक था। बहुत से लोग उस समझौते के पक्ष में नहीं है। वे यह जानते हैं कि यह सही है कि प्रधानमंत्री द्वारा कम्युनल अवार्ड में दी गई सीटों की अपेक्षा पूना पैक्ट में अस्पृश्यों को अधिक सीटें दी गई हैं। पूना पैक्ट से अस्पृश्यों को 148 सीटें मिली हैं, जबकि कम्युनल अवार्ड में 78 सीटें मिलनी थीं। परंतु इससे यह परिणाम निकालना कि कम्युनल अवार्ड की अपेक्षा पूना पैक्ट में बहुत अधिक दिया गया है, वास्तव में कम्युनल अवार्ड की उपेक्षा करना है क्योंकि कम्युनल अवार्ड ने भी अस्पृश्यों को बहुत कुछ दिया है।

कम्युनल अवार्ड से अस्पृश्यों को दो लाभ थे –

1. पृथक मतदाता प्रणाली द्वारा अस्पृश्यों को सीटों का निश्चित कोटा, जिन पर अस्पृश्य उम्मीदवारों को ही चुना जा सकता था।

2. दोहरी मतदान सुविधा– वे एक वोट का उपयोग पृथक मतदान के तहत दे सकते थे और दूसरा आम चुनाव के समय देते।

अब यदि पूना पैक्ट ने सीटों का कोटा बढ़ा दिया गया है तो इसने दोहरे मत की सुविधा भी समाप्त कर दी है। सीटों की वृद्धि दोहरे मत की सुविधा की हानि की क्षतिपूर्ति कभी नहीं कर सकती। कम्युनल अवार्ड द्वारा किया गया दोहरे मतदान का अधिकार अमूल्य एवं विशेष अधिकार था। यह एक राजनीतिक हथियार था, जिसकी बराबरी नहीं की जा सकती। प्रत्येक निर्वाचनक्षेत्र में मतदान करने योग्य अस्पृश्यों की संख्या पूर्ण मतदान संख्या का दसवां भाग है। इस मतदान शक्ति से आम हिंदू उम्मीदवारों के चुनाव में अस्पृश्यों की स्थिति निर्णायक होती, चाहे साधिकार न भी हो। कोई भी सवर्ण हिंदू अपने निर्वाचनक्षेत्र में अस्पृश्यों की उपेक्षा नहीं कर पाता और अस्पृश्यों को आंख दिखाने की स्थिति में भी न रहता। अस्पृश्यों के मतों पर निर्भर करता। आज अस्पृश्यों की कम्युनल अवार्ड की अपेक्षा कहीं अधिक सीटें मिली हैं। बस उन्हें यही मिला। प्रत्येक सदस्य यदि क्षुब्ध नहीं भी है, तो भी उदासीन है। यदि कम्युनल अवार्ड द्वारा दिया गया दोहरे मतदान का अधिकार बरकरार रहता, तो अस्पृश्यों को कुछ सीटें भले ही कम मिलती, परंतु प्रत्येक सदस्य अस्पृश्यों के लिए भी प्रतिनिधि होता। अस्पृश्यों के लिए अब सीटों की संख्या में की गई बढ़ोतरी कोई बढ़ोतरी नहीं है। इससे पृथक मतदान प्रणाली और दोहरे मतदान की क्षतिपूर्ति नहीं होती। हिंदुओं ने यद्यपि पूना पैक्ट पर खुशियां नहीं मनाई, वे इसे पंसद नहीं करते। वे इस अफरातफरी में श्री गांधी के प्राणों की रक्षा के लिए चिंतित थे। इस दौरान भावना की लहर चल रही थी कि श्री गांधी के प्राण बचाना महान कार्य है। इसलिए जब उन्होंने समझौते की शर्तें देखी, तो वे उन्हें पसंद नहीं थीं, लेकिन उनमें उस समझौते को अस्वीकार करने का भी साहस नहीं था। जिस समझौते को हिंदुओं ने पंसद नहीं किया और अस्पृश्य उसके विरोध में था, पूना पैक्ट के दोनों पक्षों को स्वीकार करना पड़ा और उसे भारत सरकार के अधिनियम में शामिल कर लिया गया।

सामार – बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर
सम्पूर्ण वाङ्मय खंड–16
पृष्ठ सं. 95 से 98
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

बाबा की वाणी

बाबा साहेब डॉ. बी. आर. आंबेडकर ने कहा था कि ये मेरे अनार्य, शूद्र, बहुजन समाज के लोगो–

(1) तुम्हीं भारत के मूलनिवासी हो।

(2) तुम्हें पहले अनार्य, असुर, राक्षस, शूद्र, पिछड़ा, अछूत कहा जाता था और अब हरिजन (अनुसूचित जाति, आदिवासी, अनुसूचित जनजाति) कहा जाता है।

(3) आर्यों और अनार्यों के युद्ध में तुम्हारी हार का परिणाम ही तुम्हारी गुलामी है।

(4) समस्त भारत भूमि तुम्हारे पूर्वजों की धरोहर है।

(5) भारत के तुम्हीं सही और सच्चे उत्तराधिकारी हो।

(6) तुम्हें बलपूर्वक गुलाम बनाया गया है।

(7) तुम्हारी धन और धरती पर बलात् कब्जा किया गया है।

(8) तुम्हारी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, धर्म और इतिहास नष्ट कर दिए गए हैं।

(9) तुम्हें धर्म का गुलाम भी बनाया गया है।

(10) तुम हिंदू कभी नहीं थे, और न अब हो। बल्कि तुम तो हिंदू धर्म के गुलाम हो।

(11) हिंदू धर्म छोड़ना धर्म परिवर्तन नहीं है।

(12) हिंदू धर्म छोड़ना तो गुलामी की जंजीर तोड़ना है।

(13) हिंदू धर्म का त्याग वीर पुरूष ही कर सकते हैं।

(14) अपने पूर्वजों की तरह तुम भी वीर हो। परंतु तुम्हारी वीरता के अंकुर को कुचल दिया गया है।

(15) तुम्हारी रंगों में तुम्हारे पूर्वजों का रक्त दौड़ रहा है, इसे पहचानों।

(16) इसे पहचानों कि तुम वीर पिता के वीर पुत्र हो। तुम शिक्षित हो, संगठित होओ और संघर्ष करो। विजय तुम्हारे हाथों में निश्चित होगी।

(17) जाति के आधार पर किसी को ऊंचा मानना पाप है और अपने को नीचा मानना महापाप है।

(18) हिंदू धर्म की आत्मा वर्ण और जाति में ही है।

(19) जाति एवं वर्णहीन हिंदू की कल्पना नहीं की जा सकती।

(20) जाति एवं वर्णवाद ही आपकी गुलामी के कारण है।

(21) जब तक तुम वर्ण एवं जातिवाद में फंसे रहोगे, तब तक शूद्र होकर हिंदुओं के गुलाम ही बने रहोगे।

(22) हिंदू धर्म में जाति को ही प्रधानता है, कर्म को नहीं।

(23) जब तक तुम हिंदुओं के गुलाम रहोगे, तब तक तुम नीच जाति में ही रहोगे और तुम्हारा स्थान नीचा ही रहेगा।

(24) हिंदू धर्म वर्णों का धर्म है। तुम्हारी गणना किसी वर्ण ने नहीं, क्योंकि हिंदू सवर्ण है, तो तुम अवर्ण हो। (सवर्णस..वर्णवर्ण सहित)

(25) तुम हिंदू धर्म के कर्मकांडों को नहीं कर सकते।

(26) हिंदू धर्म के भगवान, अवतार और देवी–देवता तुम्हारे नहीं और न तुम उनके हो।

(27) इसलिए हिंदू देवी–देवता और भगवान तुम्हारी छाया तक से परहेज करते रहे और आज भी कर रहे हैं।

(28) कुत्ते, बिल्ली, पक्षी, गाय, भैस के पेशाब से उन्हें कोई परहेज नहीं है, परंतु तुम्हारे चढ़ाए गए गंगा जल से भी वे अपवित्र हो जाते हैं।

(29) उनके अपवित्र हो जाने के बाद गाय के मल–मूत्र के लेपन या छिड़काव से पुनः शुद्धि होती है।

(30) हिंदू धर्म के भगवान और देवी–देवता तुम्हारे पूर्वजों के हत्यारे हैं, परंतु उन्हें कोई पापी नहीं कहता।

(31) तुम्हारा समान मानव आकार है परंतु सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक अधिकारों से सदा वंचित रहे। जब तक तुम इसी तरह बनावटी हिंदू बने रहोगे, तब तक समस्त अधिकारों से वंचित ही रहोगे।

(32) तुम आर्य समाज (हिंदू) की परिधि रेखा के बाहर के आदमी हो।

(33) मनुवादी व्यवस्था के अनुसार तुम्हें विद्यार्जन, धन संपत्ति रखना, हथियार रखना निषेध है।

(34) धन और हथियार रखना तथा धरती पर कब्जा करना तो शूद्र के लिए पाप माना जाता है।

(35) शूद्र को शारीरिक क्षमता बढ़ाना (पहलवानी करना) सख्त मना था।

(36) शूद्र को राजनीति की बात सोचना स्वप्न में भी मना था।

(37) तुम्हें सिर्फ हिंदुओं की सेवा का काम ही काम था।

(38) तुम्हारी मुख्य समस्या गरीबी ही नहीं है, बल्कि हिंदू और हिंदू समाज है। जिसके आधार पर तुम्हारा धार्मिक, आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक शोषण हो रहा है।

(39) तुम्हारी विरासत पर तीन लोगों द्वारा तीन बार आक्रमण हुआ – (क) आर्यों का, (ख) मुसलमानों का (ग) अंग्रेजों का।

(40) तुम दोहरी और तेहरी गुलामी में फंसे रहे।

(41) 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। परंतु तुम्हे आज भी परतंत्रता में रखा जाता है।

(42) तुम्हारी लड़ाई केवल अधिकारों की प्राप्ति के लिए ही नहीं है, बल्कि वह तो आजादी की लड़ाई है।

(43) इस लड़ाई के लिए मैंने तुम्हें महान अस्त्र दिया है। जो हिंदुओं के ब्रह्मास्त्र से भी बड़ा है।

(44) यह अस्त्र एक मत (मताधिकार) का है। इस अस्त्र का असर छोटे से गांव से प्रारंभ होकर दिल्ली तक होगा।

(45) इस अस्त्र द्वारा तुम राजा बन सकते हो तथा गैरों को भी राजा बना सकते हो। इस अस्त्र द्वारा अन्यायी, गैर उत्तरदायी शासक को हटा सकते हो।

(46) राजा बनने के लिए रानी के पेट की जरूरत नहीं है, बल्कि तुम्हारे वोटों से भरी पेटी की जरूरत है।

(47) तुम्हें जो आरक्षण मिला है वह किसी की दया की भीख नहीं है, बल्कि यह अधिकार तुम्हें तब तक सुरक्षित है, जब तक की तुम्हें आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समानता प्राप्त नहीं होती।

(48) अधिकार मांगने से नहीं मिलता। अधिकार छीनने पड़ते हैं। उन्हें छीनों और उपयोग करो।

(49) यदि अधिकार प्राप्त नहीं होते तो उन्हें प्राप्त करने के लिए कुर्बानी करनी पड़ती है। बिना कुर्बानी अधिकार और अधिकार बिना उन्नति नहीं हो सकती।

(50) उन्नति के लिए शिक्षा, शिक्षा के लिए सान, सान के लिए सुविधाएं चाहिए। तो उन्नति के रास्ते में आने वाली बाधाओं को हटाओ चाहे कितनी ही कुर्बानी करनी पड़े।

(51) तुम्हें सावधान रहना चाहिए। तुम्हें सवर्णों के मीडिया अखबार, टी.वी., ट्रांजिस्टर पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

(52) तुम्हें अपने पैर चाहिए, बैसाखी नहीं।

(53) सुअर, घोड़े, गधे, बकरे और अन्य के लालच से तुम्हारा उत्थान न होगा।

(54) तुम अपने संस्कार सुधारों तथा अपनी आने वाली पीढ़ी को नया रास्ता दो। बनावटी प्रलोभन एवं सुविधाओं का बहिष्कार करो, जनेऊ और सवर्णों के संग आने से तुम्हारा कभी भला नहीं होगा।

(55) पूना–पैक्ट की वजह से तुम्हारा राजनैतिक अधिकार बेमाने हो गया है। अन्यथा आज तुम बहुत आगे बढ़ गए होते।

(56) पूना पैक्ट से तुम्हारा प्रतिनिधित्व विकलांग नहीं बल्कि लकवाग्रस्त हो गया।

(57) इस लकवे की बीमारी का इलाज एक पार्टी बनाकर एक झंडे के नीचे आने से हो सकता है। जिसका उद्देश्य हर मानव का उत्थान, विकास पर परिलक्षित हो।

(58) अधिकारियों की मनमानी और बेईमानी से शासकीय नौकरियों में आरक्षण का कोटा पूर्ण नहीं हो सका, जिससे तुम्हारे करोड़ों योग्य, शिक्षित लोग पेट की भूख मिटाने के लिए बेकार (बेरोजगार) है।

(59) आरक्षण पूर्ण न होने से करोड़ो रूपयों की वार्षिक हानि को बचाने का कार्य करो तथा अपनी आर्थिक दशा सुधारो।

(60) इक्कीसवीं सदी तुम्हारी अपनी स्वतंत्र सदी होगी। इस पर विश्वास करके का कार्य करो तथा अपनी आर्थिक दशा सुधारो।

(61) याद रहे कि अन्याय का विरोध और अधिकार की प्राप्ति ही रंगीन जीवन है।

(62) भारत के 85% लोग जो शोषित, पीड़ित, दलित हैं, वे अपने पढ़े–लिखे लोगों की बातों को कटु सत्य मानने पर भी अपने दैनिक जीवन के व्यवहार में नहीं लाते। जब कि उनको लाना चाहिए।

(63) बाबा साहेब ने कहा था कि मैंने भारतीय संविधान बना कर एक ऐसे मंदिर का निर्माण किया है कि उसका पुजारी अगर शैतान बना तो यह देश गृह युद्ध में ऐसा तपेगा जैसे सुनार सोने को तपाता है और जिस तरह तप कर शुद्ध सोना निकलता है उसी तरह भारत ठीक बनेगा और अगर इस मंदिर में कोई इंसान पुजारी (प्रधानमंत्री) बना तो यह देश दुनिया का पहला खुशहाल बलवान और धनवान देश होगा।

जब तक 85% लोग ऐसा न करेंगे, तब तक शोषित नीचे और 15% ऊंचे और शोषक रहेंगे। इसके लिए 85% लोग ही जिम्मेदार तथा दोषी हैं। यह सत्य है।

साभार – भारतीय अचम्भा
पृष्ठ सं. 41 से 44
उमेश कुमार एडवोकेट

चातुर्वर्ण्य-क्या ब्राह्मण अपनी उत्पत्ति से परिचित हैं?

प्रत्येक हिंदू का यह मूल विश्वास है कि हिंदुओं की सामाजिक व्यवस्था दैवीय है। इस दैवीय व्यवस्था के तीन आधार हैं। प्रथम, समाज चार वर्णों में विभक्त है– 1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य, और 4. शूद्र। द्वितीय, चारों वर्णों की स्थिति एक–दूसरे से जुड़ी है। उसमें चरण–दर–चरण असमानता है। ब्राह्मणों का स्थान सर्वोपरि है। क्षत्रिय ब्राह्मणों के नीचे हैं, परन्तु वैश्यों और शूद्रों से ऊपर है। वैश्य ब्राह्मणों और क्षत्रियों के नीचे हैं, परन्तु शूद्रों से ऊपर है। शूद्र सबसे नीचे हैं। तृतीय, चारों वर्णों का व्यवसाय निश्चित है। ब्राह्मणों का व्यवसाय अध्ययन–अध्यापन है। क्षत्रियों का कार्य लड़ना है। वैश्यों का कार्य व्यापार है और शूद्रों का शरीरिक श्रम से तीनों वर्णों की सेवा करना है। यह हिन्दुओं की वर्ण–व्यवस्था कहलाती है। यह हिंदूधर्म की आत्मा है। वर्ण–व्यवस्था को छोड़कर हिन्दुओं में ऐसा कुछ नहीं है, जिसमें वे अन्य धर्मों से भिन्न हों। इस कारण यह आवश्यक है कि इस बात का विवेचन किया जाए कि वर्ण–व्यवस्था का प्रचलन कैसे हुआ?

इसकी उत्पत्ति की व्याख्या के लिए हमें हिंदुओं के प्राचीन शास्त्रों का मंथन करना होगा कि वे इस विषय में क्या कहते हैं?

I

यह अच्छा होगा कि सर्वप्रथम वेदों के विचारों को देखा जाए। इस विषय पर ऋग्वेद के दसवें मण्डल के नब्बेवें श्लोक में इस प्रकार कहा गया है :

1. "पुरूष के एक सहस्त्र शीश हैं, एक सहस्त्र चक्षु, एक सहस्त्र चरण। वह पृथ्वी पर सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक है। उसने दस अंगुलियों से हर छोर से समस्त भूमंडल को आच्छादित कर रखा है।" 2. "पुरूष स्वयं सम्पूर्ण (ब्रह्मांड) है जो वर्तमान है। (जो भावी है) वह अमरता का स्वामी है, भोजन से उसका विस्तार होता है। 3. उसकी महानता ऐसी है और पुरूष सर्वश्रेष्ठ है। सारी सृष्टि उसका क्षेत्र है और उसका तीन चौथाई अविनाशी अंश अंतरिक्ष में है। 4. पुरूष का तीन चौथाई अंश उर्ध्व है, उसका एक चौथाई अंश यहां पुनः विद्यमान है, फिर उसका सर्वत्र विलय हो गया। उन सभी पदार्थों में जो भक्षण करते हैं और भक्षण नहीं करते। 5. उससे विराज उत्पन्न हुआ और विराज से पुरूष। जन्म लेते ही वह धरती से आगे बढ़ गया, आगे भी और पीछे भी। 6. जब देवों ने पुरूष की आहुति से यज्ञ किया, वसंत उसका घी था, ग्रीष्म लकड़ी और शरद समिधा। 7. यह बलि पुरूष जो सर्वप्रथम जन्मा, उन्होंने बलि घास पर जला दिया। उसके साथ देवताओं, साध्यों और ऋषियों ने आहुति दी। 8. इस ब्राह्मंड यज्ञ से दही और मक्खन उपलब्ध हुए। इससे वे नभचर और थलचर बने जो वन्य और पालतू हैं। 9. ब्रह्मांड यज्ञ से ऋग्वेद और सामवेद की ऋचाएं निकली, छंद और यजुस निकले। 10. उससे अश्व जन्मे और दोनों जबड़ों वाले सभी पशु जन्मे, मवेशी जन्मे और उसी से अजा मेष जन्मे। 11. जब (देवों के) पुरूष को कितने भागों में काटकर विभाजित कर दिया। उसका मुख क्या था? उसकी कितनी भुजाएं थीं? (कौन से दो तत्व) उसकी जंघाएं और चरण बताई गई हैं। 12. ब्राह्मण उसका मुख था, राजन्य उसकी भुजाएं बनीं, जो वैश्य (बना) वह उसकी जंघाएं थीं, शूद्र उसके पैरों से उत्पन्न हुए। 13. उसकी आत्मा (मानस) से चन्द्रमा, उसके चक्षु से सूर्य, उसके मुख से इन्द्र और अग्नि, उसके श्वास से वायु बनी। 14. उसकी नाभि से मारूत बना, उसके शीर्ष से आकाश बना, उसके चरणों से धरती उसके कर्ण से दिशाएं और इस प्रकार विश्व बना। 15. जब देवता यज्ञ कर रहे थे, उन्होंने पुरूष को एक बलि–जीव के रूप में बांधा। इसके लिए सात छड़ियों की, सात टुकड़ों की समिधा चढ़ाई गई। 16. इस यज्ञ में देवताओं ने आहुति दी। ये प्रथम अनुष्ठान थे। इन शक्तियों ने आकाश से कहा पूर्व साध्य, देवतागण कहां है।"

इस मंत्र वृंद का सर्वविदित नाम "पुरूष सूक्त" है और यह जाति और वर्ण–व्यवस्था की शास्त्रीय सिद्धांत माना जाता है।

अन्य वेदों में इस सिद्धांत की कहां तक पुष्टि की गई है?

सामवेद के मंत्रों में पुरूष सूक्त सम्मिलित नहीं किया गया, न इसमें वर्ण–व्यवस्था की कोई अन्य व्याख्या की है।

यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं, 'श्वेत' और 'कृष्ण'।

कृष्ण यजुर्वेद में तीन संहिताएं और मंत्रों का समूह है। ये हैं कठ संहिता, मैत्रायणी संहिता और तैत्तिरीय संहिता।

श्वेत यजुर्वेद में मात्र एक संहिता है– वाजसनेयी संहिता।

कृष्ण यर्जुवेद की मैत्रायणी और कठ संहिताओं में ऋग्वेद के पुरूष सूक्त का कोई संदर्भ नहीं है, न उसमें वर्ण–व्यवस्था की उत्पत्ति का मूल बताने का कोई प्रयास है।

कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता और श्वेत यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता में वर्ण–व्यवस्था के संबंध में कुछ संकेत हैं।

वाजसनेयी संहिता में वर्ण–व्यवस्था के आरम्भ के संबंध में केवल एक प्रसंग है। दूसरी ओर तैत्तिरीय संहिता में दो प्रसंग हैं। इन दोनों प्रसंगों के संदर्भ में दो बातें उल्लेखनीय हैं। प्रथम यह कि इन दोनों में रंच–मात्र भी साम्य नहीं है। वे नितांत भिन्न हैं। दूसरे यह कि एक में तो श्वेत यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता से पूर्णतः साम्यता है। तैत्तिरीय संहिता का मूल पाठ निम्न प्रकार से है जिसे स्वतंत्र व्याख्या कहा जा सकता है। –

"वह (वृात्य) भावावेश से भर उठा तब राजन्य प्रकट हुआ।"

"जिसके घर यह जाने वाला वृात्य अतिथि रूप में आता है, उसे वह (राजा) स्वयं से श्रेष्ठ जानकर उसका सम्मान करें। ऐसा करके वह राजपद अथवा अपनी सत्ता पर आघात नहीं करता। उससे ब्राह्मण प्रकट हुआ और क्षत्रिय। उन्होंने कहा "हम किस में प्रवेश करें आदि"

वाजसनेयी संहिता में सम्मिलित व्याख्या जो तैत्तिरीय संहिता से साम्य रखती है, इस प्रकार है –

"उसने एक के साथ स्तुति की। प्राणी बने, प्रजापति राजा थे। उन्होंने तीन के साथ स्तुति की, ब्राह्मण की रचना हुई। ब्राह्मणस्पति शासक थे। उन्होंने पांच के साथ स्तुति की, विद्यमान पदार्थ उत्पन्न हुए। ब्राह्मणस्पति शासक थे। उन्होंने सात के साथ स्तुति की, सात ऋषिगण उत्पन्न हुए। धातृ शासक थे। उन्होंने नौ के साथ स्तुति की, पितृ उत्पन्न हुए। अदिति स्वामी थे। उन्होंने ग्यारह के साथ स्तुति की, ऋतुएं उत्पन्न हुईं। आर्तव स्वामी थे। उन्होंने तेरह के साथ स्तुति की, मास उत्पन्न हुए। वर्ष राजा था। उन्होंने पन्द्रह के साथ स्तुति की, क्षत्रिय उत्पन्न हुआ। इन्द्र राजा थे। उन्होंने सत्रह के साथ स्तुति की, पशु उत्पन्न हुए। बृहस्पति राजा थे। उन्होंने उन्नीस के साथ स्तुति की, शूद्र और आर्य (वैश्य) उत्पन्न हुए। दिवस और रात्रि शासक थे। उन्होंने इक्कीस के साथ स्तुति की, अविभाजित खुरधारी पशु उत्पन्न हुए। वरूण राजा थे। उन्होंने तेईस के साथ स्तुति की, लघु पशु उत्पन्न हुए। पुशान राजा थे। उन्होंने पच्चीस के साथ स्तुति की, वन्य जीव उत्पन्न हुए। वायु राजा थे। (ऋ.वे. 10.90, 8) उन्होंने सत्ताईस के साथ स्तुति की धरती और स्वर्ग विलग हुए। वसु, रूद्र और आदित्य उनसे विलग हो गए, वे राजा थे। उन्होंने उन्तीस के साथ स्तुति की, वृक्ष उत्पन्न हुए। सोम राजा थे। उन्होंने इकत्तीस के साथ स्तुति की, प्राणी उत्पन्न हुए। मास के पक्ष राजा थे। उन्होंने इकत्तीस के साथ स्तुति की, विद्यमान पदार्थ शांत हो गए। प्रजापति परमेष्ठी राजा थे।"

यहां यह उल्लेखनीय है कि न केवल ऋग्वेद और यजुर्वेद में ही असमानता है, बल्कि यजुर्वेद की दो संहिताओं में ही, वर्णों की उत्पत्ति जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विषमता है।

अब हम अथर्ववेद पर आते हैं। इसमें भी दो व्याख्याएं हैं। उसमें पुरूष सूक्त सम्मिलित है। यद्यपि, जिस क्रम में ऋग्वेद के मंत्र हैं, वह वैसा नहीं ह। महत्वपूर्ण बात यह है कि अथर्ववेद पुरूष सूक्त से संतुष्ट नहीं है। इसकी अलग व्याख्या भी है। एक व्याख्या निम्नलिखित है :

"सर्वप्रथम ब्राह्मण उत्पन्न हुआ। उसके दस सिर और दस मुख थे। उसने सर्वप्रथम सोमपान किया, उसने विष को प्रभावहीन किया।

"देवता राजन्य से भयभीत थे, जब वह गर्भ में था। उन्होंने उसे बंधन ग्रस्त कर दिया जब वह गर्भ में था। परिणामस्वरूप, वह राजन्य बंधनयुक्त उत्पन्न हुआ। यदि वह अजन्मा निर्बंध होता तो वह अपने शत्रुओं का वध करता। राजन्य, कोई अन्य जो चाहे कि वह बंधन मुक्त उत्पन्न हो और अपने शत्रुओं का हनन करता रहे तो उसे वे एन्द्र ब्राहस्पत्य आहुतियां दें। राजन्य के लक्षण इन्द्र जैसे हैं और ब्राह्मण बृहस्पति हैं। ब्राह्मण के माध्यम से ही कोई राजन्य को बंधनमुक्त कर सकता है। स्वर्णबंध, एक उपहार, स्पष्ट रूप से उसे बंधन से मुक्त करता है।"

एक अन्य व्याख्या, उन व्यक्तियों का उल्लेख करती है, जो मनु की संतति है, उनका निम्नांकित उद्धरण में उल्लेख है:

"प्रार्थनाएं और मंत्र पहले इन्द्र की उपासना में उस उत्सव में संकलित हुए जिसे अथर्वन, पिता मनु, और दधीचि न सुशोभित किया। "हे रूद्र। यज्ञ से पिता मनु ने जो सम्पदा अथवा सहायता ग्रहण की, तेरे निर्देश में हमें वही सब प्राप्त हो।"

"आपके वे पवित्र उपचार, हे मरूत। वे जो बहुत मांगलिक हैं, हे शक्तिशाली देव। वे जो बहुत लाभप्रद है, जिनको हमारे पिता मनु ने पसंद किया है, रूद्र के वरदान और सहायता, हमें प्राप्त हों।"

"जो प्राचीन मित्र दैवी शक्ति से सम्पन्न था। पिता मनु ने उसके प्रति देवों की सफलता के प्रवेश द्वार की भांति मंत्र रचे थे।"

"यज्ञ मनु हैं, हमारे पालक पिता"

"देवो, तुमने हमें उत्पन्न किया, पोषित किया और हमारे प्रति अनुग्रह किया हमें पिता मनु के मार्ग से विचलित न करो।"

"वह (अग्नि) जो मनु की संतति के बीच देवताओं के उद्बोधक स्वरूप निवास करता है, वह इनका भी स्वामी है।"

"अग्नि, देवताओं सहित और मनु की संतान सहित मंत्रोच्चार से विविध यज्ञ कर रहे हैं, आदि "तुम देवों, वज और ऋभुगण जैसे देवों को प्रसन्न करते हो। मानुष की संतति के बीच शुभ दिन देवताओं के मार्ग से हमारे यज्ञ में आओ।"

"मनुष–जन ने यज्ञ में अग्नि उद्बोधक की स्तुति की।"

"मनुष्यों के स्वामी अग्नि ने जब भी कृतज्ञ मानुष–जन के आवास को प्रदीप्त किया, उसने राक्षस जन को मार भगाया।"

इस संदर्भ में स्थिति के निरूपण के लिए एक क्षण रूक कर विचार करते हुए यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती है कि चार वर्णों की उत्पत्ति के विषय में वेदों में कोई सर्वसम्मति नहीं है। किसी अन्य वेद ने ऋग्वेद की पुष्टि नहीं की है कि ब्राह्मण प्रजापति के मुख से उत्पन्न हुए, क्षत्रिय भुजाओं से, वैश्य जंघाओं से और शूद्र पैरों से।

II

अब हम ब्राह्मण साहित्य पर आएं और देखें कि इस प्रश्न पर वे क्या कहते हैं?

शतपथ ब्राह्मण की व्याख्या इस प्रकार है :

"प्रजापति ने "भू" जपते हुए यह पृथ्वी बनाई, "भुवः" के साथ वायु बनाई, "स्वाहा" के साथ आकाश बनाया। ब्रह्मांड का इस संसार से सह–अस्तित्व है। अग्नि सर्वत्र व्याप्त है। "भू" कहकर प्रजापति ने ब्राह्मण उत्पन्न किया, "भुवः" से क्षत्रिय, "स्वाहा" से विस

बनाया। अग्नि सर्वत्र व्याप्त है। भू कहकर प्रजापति ने स्वंय को उत्पन्न किया, भुवः कहकर संतति रची। "स्वाहा" से पशु उत्पन्न हुए। यह विश्व स्व, संतति और पशु है, अग्नि सर्वत्र व्याप्त है।"

शतपथ ब्राह्मण की एक अन्य व्याख्या है। यह निम्नांकित है:

"भाष्यकार के अनुसार यहां ब्रह्मा अग्नि रूप में विद्यमान थे। जिसमें ब्राह्मण वर्ण का रूप है। पहले यह एक मात्र (ब्रह्मांड) थे। एक रहते उनकी वृद्धि नहीं हुई। उन्होंने शक्ति से एक श्रेष्ठ क्षात्र (क्षेत्र) उत्पन्न किया अर्थात् देवताओं में वे जिनमें शक्ति है (क्षत्राणी), इन्द्र, वरूण, सोम, रूद्र, परजन्य, यम, मृत्यु, ईशान। इस प्रकार क्षात्र से श्रेष्ठ कोई नहीं। इसलिए ब्राह्मण राजसूय यज्ञ में क्षत्रिय से नीचे बैठते हैं। वह क्षत्रिय की गरिमा स्वीकार करता है। ब्रह्मा, क्षत्रिय का उदगम है। इस प्रकार, यद्यपि राजा की श्रेष्ठता है अंत में वह उद्गम हेतु ब्राह्मण के आश्रय में जाता है। वह अति दयनीय बन जाता है। उसी के समान जिसकी श्रेष्ठता आहत होती है। 24. उसका विस्तार नहीं हुआ। उसने विस् उत्पन्न किया। देवताओं की इस श्रेणी में वसु, रूद्र, आदित्य, विश्वदेव, मारूत आते हैं। 25. उसकी वृद्धि नहीं हुई। उसने शूद्र–वर्ण पूशान उत्पन्न किया। यह पृथ्वी पूशान है। सो वह सभी का पोषण करती है। 26. उसकी वृद्धि नहीं हुई, उसने शक्ति से एक विलक्षण रूप उत्पन्न किया। न्याय (धर्म) यह शासक है (क्षात्र) अर्थात् न्याय। इस प्रकार न्याय से श्रेष्ठ कुछ नहीं। इसलिए निर्बल बलवान से त्राण को न्याय मांगता है, जैसे एक राजा से। यह न्याय सत्य है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्ति के विषय में, वे कहते हैं–"यह सत्य बोलता है, क्योंकि उसमें दोनों गुण हैं।" 27. वह ब्रह्म, क्षात्र, विस् और शूद्र है। अग्नि के माध्यम से देवताओं में वह ब्रह्मा बन जाता है, मनुष्यों में ब्राह्मण। (दैवी), क्षत्रिय के माध्यम से (मनुष्य) एक क्षत्रिय, (दैवी) वैश्य से एक (मनुष्य) वैश्य, (दैवी), शूद्र के माध्यम से एक (मनुष्य) शूद्र बनता है। अब व देवों में अग्नि और मनुष्यों में ब्राह्मण है, और वे वास के इच्छुक हैं।"

तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन व्याख्याएं हैं। प्रथम इस प्रकार है:

यह समस्त (ब्रह्मांड) ब्रह्मा द्वारा रचित है। मनुष्य कहते हैं कि वैश्य ऋक् ऋचाओं से बना है। वे कहते हैं यजुर्वेद के गर्भ से क्षत्रिय उत्पन्न हुआ है। सामवेद से ब्राह्मण प्रकट हुआ। यह शब्द प्राचीन है, घोषित प्राचीन।

दूसरी कहती है:

"ब्राह्मण वर्ण देवों से प्रकट हुआ, शूद्र असुरों से"

तीसरी इस प्रकार है:

"वह शुष्क भोजन से स्वेच्छा से दुग्ध की आहुति दे। शूद्र दुग्ध की आहुति न दें क्योंकि शूद्र शून्य से जन्मा है। वे कहते हैं कि जब शूद्र दूध चढ़ाता है, वह आहुति नहीं है। शूद्र अग्निहोत्र में दूध से आहुति न दे क्योंकि वे इसे शुद्ध नहीं करते। जब उसे छान लिया जाये, तब वह आहुति है।"

III

अगली बात यह देखनी है कि वर्ण–व्यवस्था के संबंध में स्मृतियों की क्या व्याख्या है। उसका ज्ञान आवश्यक है। मनु ने इस संबंध में कहा है :

"उस (स्वयंभू) ने इच्छा करके और अपनी देह से विभिन्न जीवों की रचना के मनोरथ से पहले सागर की सृष्टि की और उसमें एक बीज छोड़ दिया। 9. यह बीज एक स्वर्णिम अंडज बन गया। सूर्य के आकार का, उससे वह स्वयं ब्रह्मा बनकर उत्पन्न हुए, सारे संसार का जनक। 10. जलधि नाराः कहलाया क्योंकि वह नर से उत्पन्न हुआ था और क्योंकि यह उनकी प्रथम क्रिया थी, इसलिए वे नारायण जाने जाते हैं। 11. वे अजर अगोचर, विद्यमान और अविद्यमान कर्ता पुरूष से उत्पन्न हुए, इसलिए जगत में ब्रह्मा कहलाए। 12. एक वर्ष एक अंडज में रहकर महिमामय पुरूष अपनी ध्यानावस्था से युग्म बन गए।"

"कि विश्व में प्राण प्रतिष्ठा हो, उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की रचना की जो उनके मुख, भुजाओं, जंघाओं और चरणों से उत्पन्न हुए। 32. अपनी देह को दो भागों में विभक्त कर परमात्मा (ब्रह्मा) एक अंग पुरूष और दूसरा अंग नारी बन गया उसमें उन्होंने विराज की सृष्टि की। 33. हे श्रेष्ठ द्विजो, जानो कि मैं ही वह पुरूष विराज स्वयं समस्त संसार का रचयिता हूं। 34. प्राणियों की उत्पत्ति हेतु मैंने कठोर उपासना की और सर्वप्रथम दस महर्षि, महान ऋषि, जीवों के स्वामी बनाए। 35. यथा मरीचि, अत्रि, आंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेतस, वशिष्ठ, भृगु और नारद की रचना की। 36. उन्हें महान शक्ति प्रदान की, सात अन्य मनु, देवता और देवियां और अपार शक्तिमान महर्षि उत्पन्न किए। 37. यक्ष, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, अप्सरा, असुर, नाग, सरिसृप, विशाल पक्षी और भिन्न–भिन्न पितार, 38. बिजली, गगन गर्जन, मेघ, शकुन अपशकुनकारी ध्वनियां, धूम्रकेतु और विभिन्न तारागण, 39. किन्नर, कपि, मीन, विविध पक्षी, पशु, मृग, मानव, वन्य पशु और दो जबड़ों वाले पशु 40. विशाल और लघु आकार के रेंगने वाल जीव मुख जुएं, मक्खियां, पिस्सू, डांस, वन मक्खी, और विविध अचर पदार्थ 41. इस प्रकार अपने प्रयत्नों और अपने तपोबल से प्रत्येक जीव के पूर्व कर्मों के अनुसार समस्त चर–अचर जगत का सृजन किया।

मनु ने अपनी 'स्मृति' में उन आधारभूत कारणों के विषय में एक अन्य मत प्रकट किया है, जिनके परिणाम स्वरूप मनुष्यों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

"अब मैं संक्षेप में बताता हूं कि किस क्रम से अपने गुणानुसार आत्माएं अपनी स्थिति को पहुंचती हैं। 40. सत्व सम्पन्न आत्माएं देवता बन जाती हैं, रजोगुणयुक्त मनुष्य बनती है, जबकि तमोगुण वाली वन्यजंतु होती है–यह तीन गतियां हैं। 43. हाथी, अश्व, शूद्र और प्रताणनीय म्लेच्छ, सिंह, बाघ और सूकर की मध्यम अंधकार स्थिति को प्राप्त होते हैं। 46. राजा, क्षत्रिय, राज पुरोहित और वे व्यक्ति जिनका मुख्य व्यवसाय वाद प्रतिवाद है वे दुर्वासना की मध्य स्थिति को प्राप्त होते हैं। 48. मक्त, तापस, ब्राह्मण, विमानारूढ़ देवतागण, तारामंडल, दैत्यों में न्यूनतम सदगुणी होते हैं। 49. अग्निहोत्री ऋषि, देवतागण, वेद, दिव्य ज्योर्तिपुंज, वर्ष, पितृगण, साध्यगण द्वितीय प्रकार के सदगुण युक्त होते हैं। 50. स्रष्टा ब्रह्मा, सदाचारिता, जो महान् (महत्) है, जो अव्यक्त है, उनमें सर्वाधिक सद्गुण विद्यमान होते हैं।

हां, मनु ऋग्वेद को मान्यता प्रदान करते हैं परन्तु उनके विचारों की तुलना करना व्यर्थ है। उसमें मौलिकता का अभाव है। वह ऋग्वेद के ही अनुगामी हैं।

IV

यह अच्छा रहेगा कि हम रामायण और महाभारत से इस मत की तुलना करें।

रामायण का कथन है कि चारों वर्ण, मनु की संतान है, दक्ष की पुत्री और कश्यप भार्या।

"सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं। सर्वप्रथम प्रजापतियों ने प्रारंभ किया जो सबसे पूर्व समय में जन्मे थे। सर्वप्रथम कर्दम थे, फिर वोकृत, शेष, समस्रेय, शक्तिमान बहुपुत्र, स्थाणु, मरीचि, अत्रि, प्रबल क्रतु, पुलस्त्य, आंगिरस, प्रचेतस, पुलह, दक्ष, फिर वैवस्वत, अरिष्टनेमी और गौरवमूर्ति कश्यप जो अंतिम थे। दक्ष प्रजापति की साठ कन्याएं बताई जाती हैं। उनमें से अदिति, दिति, दनु, कालिका, ताम्र, क्रोध, मनु और अनला इन आठ सुन्दर कन्याओं का विवाह कश्यप से हुआ। प्रसन्न होकर कश्यप ने कहा– "तुम मेरे समान पुत्र उत्पन्न करो, तीनो लोकों का पोषण करो। अदिति, दिति, दनु, और कालिका तत्पर हो गईं किन्तु अन्य तैयार न हुईं। अदिति से तैंतीस देवता उत्पन्न हुए। आदित्य, वसु, रूद्र और दो अश्विनी पुत्र। कश्यप पत्नी मनु से मनुष्य जन्मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण का जन्म मुख से हुआ, क्षत्रिय का वक्ष से, वैश्य जंघाओं से, शूद्र चरणों से जन्मे। ऐसा वेद कहते हैं। अनला से शुद्ध फलों वाले वृक्ष उत्पन्न हुए।" आश्चर्य! नितांत आश्चर्य कि वाल्मीकि ने चार वर्णों की रचना प्रजापति के स्थान पर कश्यप से बताई। स्पष्ट है कि उनका ज्ञान सुनी–सुनाई बातों तक सीमित था। यह स्पष्ट है कि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि वेद क्या कहते हैं। अब महाभारत चार स्थानों पर चार भिन्न–भिन्न व्याख्याएं देता है। प्रथम इस प्रकार हैं:

"महान् ऋषियों की भांति भव्यता से जन्मे प्रचेता के दस पुत्र गुणवान और पवित्र प्रतिष्ठित हुए और उनसे पूर्ण गौरवशाली प्राणी उनके मुख से प्रज्ज्वलित होने वाली अग्नि से स्वाहा हो गए। उनसे दक्ष प्रचेतस जन्मे और विश्व के जनक दक्ष से ये जगत। विरनी के सहवास से मुनि दक्ष को अपने समान एक सहस्र पुत्र प्राप्त हुए जिन्हें नारद ने मोक्ष का मार्ग बताया और सांख्य का अनुपम ज्ञान दिया। संतति वृद्धि के मनोरथ से दक्ष प्रजापति ने पचास पुत्रियां उत्पन्न कीं। उनमें से दस धर्म को दे दीं। तेरह कश्यप को, सत्ताइस काल नियंता इन्दु (सोम) को..... अपनी तेरह में से सर्वश्रेष्ठ पत्नी दक्षयानि से मारीचि पुत्र कश्यप को इन्द्र के पश्चात अपनी शक्ति में अद्वितीय आदित्य तथा वैवस्वत प्राप्त हुए। वैवस्वत से शक्तिमान पुत्र यम वैवस्वत उत्पन्न हुआ। मार्तण्ड, (सूर्य, वैवस्वत) को बुद्धिमान और वीरपुत्र मनु उत्पन्न हुए और प्रसिद्ध यम उसका (मनु) अनुज प्राप्त हुआ। बुद्धिमान मनु धार्मिक था जिसने एक प्रजाति चलाई। इस प्रकार उससे जन्मे (परिवार) मनुष्य, मानव जाति कहलाई। हे राजन! उससे ब्राह्मण क्षत्रियों के साथ उत्पन्न हुए।"

यहां प्रतिपादित सिद्धांत ठीक वैसा ही है जैसा कि रामायण में। भिन्नता मात्र इतनी है कि महाभारत में मनु को चार वर्णों का प्रणेता कहा गया है और दूसरे, इसमें यह नहीं कहा गया है कि चार वर्ण, मनु के चार अंगों से उत्पन्न हुए।

महाभारत की दूसरी व्याख्या ऋग्वेद के पुरूष सूक्त के समान है। वह इस प्रकार है:

"राजा ऐसे व्यक्ति को अपना राज पुरोहित नियत करे जो दुष्टता का प्रतिरोधी हो। इस विषय में वे यह प्राचीन कथा सुनाते हैं, जिसमें इला पुत्र मातृस्वन (वायु) और पुरूरवा को संवाद सन्निहित है। पुरूरवा ने कहाः "तुम मुझे बताओ कि कब ब्राह्मण, कब अन्य तीन जातियां उत्पन्न हुईं और कब श्रेष्ठता (प्रथम की) स्थापित हुई? मातृस्वन ने उत्तर दिया–"ब्राह्मण का जन्म ब्रह्मा के मुख से हुआ, उसकी भुजाओं से क्षत्रिय, उसकी जंघाओं से वैश्य जबकि इन तीन वर्णों की सेवा हेतु उसके चरणों से चतुर्थ वर्ण शूद्र उत्पन्न हुआ। जन्मते ही ब्राह्मण धर्मतत्व की रक्षार्थ धरती पर भूतजात का स्वामी बन गया। फिर सृष्टा ने पृथ्वी का शासक क्षत्रिय उत्पन्न किया। प्रजा की संतुष्टि को दण्ड धारण हेतु द्वितीय यम उत्पन्न किया और ब्रह्मा का यह आदेश था। इन तीन वर्णों को वैश्य धन–धान्य उपलब्ध कराए और शूद्र सेवा करें।" तब इला पुत्र ने पूछाः" वायु! मुझे बताओ, अपनी धन–सम्पदा सहित यह पृथ्वी किस के अधिकार में है ब्राह्मण के अथवा क्षत्रिय के?" वायु ने उत्तर दिया," अपनी ज्येष्ठता के आधार पर पृथ्वी पर विद्यमान समस्त सम्पदा का स्वामी ब्राह्मण है, जो कर्तव्य–विधान में पारंगत है, उन्हें यह ज्ञात है। ब्राह्मण जो खाता है, पहनता है, लुटाता है, वह उसी का है। सभी जातियों में श्रेष्ठ है। प्रथम जन्मा और सर्वश्रेष्ठ। जिस प्रकार कोई स्त्री अपना पति (पहला) छिन जाने पर अपने देवर, जेठ को दूसरा पति बना लेती है, उसी प्रकार विपत्ति में ब्राह्मण पहला आश्रय है और इसके बाद कोई और"।

महाभारत के शांति पर्व में तीसरी व्याख्या दी गई है:

भृगु ने उत्तर दियाः इस प्रकार ब्रह्मा ने पहले अपनी शक्ति से प्रजातियों के समान भव्य सूर्य और अग्नि को रचा। तब स्वामी ने सत्य, धर्मनिष्ठा, कठोर–भक्ति, सनातन वेद गुणकर्म, और स्वर्ग (प्राप्ति हेतु) की शुद्धता की सृष्टि की। उसने देवता, दानव, गंधर्व, दैत्य, असुर, महाराग, यक्ष राक्षस, नाग, पिशाच और मानव, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्ण प्राणी रचे। ब्राह्मण का वर्ण गौर, क्षत्रिय का लाल, वैश्य का पीत और शूद्र का काला बनाया। तब भारद्वाज ने प्रतिवाद कियाः" यदि हर जाति के चार वर्ण (रंग) उसका परिचायक हैं तो इससे पहचान में भ्रांति होती है। लालसा, क्रोध, भय, लोभ, संताप, कुंठा, भूख, क्लांति, हम सब में समान हैं। तब जाति किस से निर्धारित होती है? स्वेद, मूत्र, मल, श्लेष्मा, पित्त और रक्त सब में समान हैं (सभी शारीरिक विकार हैं) तब जाति किस से निर्धारित होती हैं? अवर्णित चल और अचल पदार्थ हैं, इनका वर्ण कैसे निर्धारित होता है"? भृगु ने उत्तर दिया, "जातियों में कोई अंतर नहीं है।"

शांति पर्व में ही चौथी व्याख्या दी गई है। वह कहती है:

भारद्वाज ने फिर पूछा परमश्रेष्ठ ब्रह्मर्षि, मुझे बताएं वे क्या गुण है कि जिन से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा

शूद्र बन जाता है?" भृगु कहते हैं, "जो शुद्ध है, प्रसव तथा अन्य संस्कारों से पवित्र हैं, जिसको वेदों का सम्पूर्ण अध्ययन है, संस्कारों को शुद्धतापूर्वक पूर्णता से अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं, जो चढ़ावे से बचे पदार्थ ग्रहण करते हैं, अपने धर्म–गुरू से सम्बद्ध है, सदैव धर्मपरायण है और सत्य को समर्पित हैं– ब्राह्मण कहलाते हैं। उसमें सत्य के दर्शन होते हैं। जिसमें सत्य, उदारता, अनाक्रामकता, उपकारिता, सादगी, धैर्य और कठोर भक्ति परिलक्षित हैं–ब्राह्मण हैं। जो राजपद के कर्तव्य का पालन करता है, जिसे वेदाध्यन का व्यसन है और जो आदान–प्रदान से प्रसन्नता अनुभव करता है, वह क्षत्रिय कहलाता है। वह जो लगनपूर्वक पशुपालन करता है, जिसको कृषि कार्यों में रूचि है, जो शुद्ध है और वेदों के अध्ययन में पारंगत है–वह वैश्य है। वह जो हर प्रकार के भोजन का व्यसनी है, सभी कार्य करता है, जो अस्वच्छ है, जिसने वेदों का परित्याग कर दिया है, जो पवित्र कर्म नहीं करता, परम्परा से शूद्र कहलाता है और यह (जो मैंने बताया) शूद्र के लक्षण हैं और यह एक ब्राह्मण में नहीं मिलते। (ऐसा) शूद्र शूद्र ही रहेगा जो ब्राह्मण (ऐसा करता है) ब्राह्मण नहीं होगा।

एक स्थान को छोड़कर अन्यत्र महाभारत वर्ण–व्यवस्था की वैदिक उत्पत्ति का समर्थन नहीं करता।

V

आइये अब यह देखें कि वर्ण–व्यवस्था के संबंध में पुराण क्या कहते हैं?

हम विष्णु पुराण से आरम्भ करते हैं। चार वर्णों की उत्पत्ति पर विष्णु पुराण में तीन सिद्धांत हैं। एक में यह आरोप मनु के सिर जाता है। विष्णु पुराण का मत है:

"ऐहिक अण्डज से पूर्व देव ब्रह्मा हिरण्यगर्भ, विश्व के शाश्वत नियंता, जो ब्रह्मा के तत्वरूप थे, जिसमें दिव्य विष्णु सन्निहित थे, जो ऋक, यजुस, साम और अथर्ववेद के रूप में जाने जाते हैं, विद्यमान थे। ब्रह्मा के दाएं अंगूठे से प्रजापति दक्ष उत्पन्न हुए, दक्ष की पुत्री अदिति थी, उसे वैवस्वत उत्पन्न हुआ, उससे मनु प्रकट हुआ। मनु के पुत्र थे इक्ष्वाकु, नृग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रमसु, नाभागनिदिष्ट, करूष और पृषघ्र। करूष से करूषगण महाशक्तिमान क्षत्रिय उत्पन्न हुए। निदिष्टा का पुत्र नाभाग वैश्य बना।"

यह व्याख्या अपूर्ण है। इसमें मात्र क्षत्रिय और वैश्यों की उत्पत्ति बताई गई है। उसमें ब्राह्मण और शूद्र की उत्पत्ति की कोई व्याख्या नहीं है। विष्णु पुराण में एक और भिन्न कथन है। उसके अनुसार :

"पुत्र कामना में मनु ने मित्र और वरूण की आहुति दी किन्तु होत्री पुजारी द्वारा मंत्र के गलत उच्चारण कर दिए जाने पर एक पुत्री उत्पन्न हुई। उसका नाम इला था। तब मित्र और वरुण की कृपा से मनु से उसे सुद्युम्न नामक पुत्र का जन्म हुआ। परन्तु महादेव के कोप के कारण वह भी नारी रूप में परिवर्तित हो गया। वह नारी सोम पुत्र बुध के आश्रम के निकट विचरती रही। बुध उस पर आसक्त हो गया और उन दोनों से एक पुत्र उत्पन्न हुआ–पुरुरवा। जन्म के उपरान्त उस देवता की जो ऋक, यजुस, साम और अथर्ववेद मानस आहुति से उत्पन्न हुआ, जो यज्ञ–पुरूष का रूप है उसकी ऋषियों ने पूजा की जिन का मनोरथ था कि सुद्युम्न अपना पुरूषत्व पुनः प्राप्त कर लें। देवताओं की कृपा से इला फिर सुद्युम्न बन गया।

"विष्णु पुराण के अनुसार अत्रि ब्रह्मा का पुत्र और सोम का पिता था, जिसे ब्रह्मा ने पादपों ब्राह्मणों और तारों का स्वामी बनाया। राजसूय यज्ञ के पश्चात सोम मदांध हो गया और देवताओं के गुरू बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण करके ले गया, जिसके लिए उसकी भर्त्सना की गई। ब्रह्मा, देवताओं और ऋषियों ने बृहस्पति की पत्नी लौटाने का अनुनय–विनय भी की। किन्तु उसने उसे नहीं लौटाया। सोम का पक्ष उष्ण–गण ने लिया जबकि अंगिरस के शिष्य रूद्र ने बृहस्पति की सहायता की। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ जिसमें देवता और दैत्यों ने क्रमशः दोनों पक्षों में युद्ध किया। ब्रह्मा बीच में पड़े और सोम को विवश किया कि वह बृहस्पति को उसकी पत्नी लौटा दें। इस बीच वह गर्भवती हो गई और एक पुत्र बुध को जन्म दिया। बहुत अनुरोध करने पर उसने स्वीकार कर लिया कि सोम ही बुध का पिता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पुरूरवा मनु की पुत्री इला और बुध का पुत्र था।

"पुरूरवा के छः पुत्र थे। उनसे ज्येष्ठतम अयुस था। अयुस के पांच पुत्र थे। नहुष, क्षत्रवृद्ध, रम्भ, रजि, अनेनस।"

"क्षत्रवृद्ध का पुत्र था सुनहोत्र जिसके तीन पुत्र कास, लेस और गृत्समद थे। अंतिम पुत्र से शौनक उत्पन्न हुआ जिसने चार वर्ण बनाए। कास का एक पुत्र था कासिराज, उसका भी पुत्र था दीर्घतमस क्योंकि धन्वतरि दीर्घतमस था।

तीसरे कथन के अनुसार वर्ण–व्यवस्था के जनक ब्रह्मा थे। वह इस प्रकार है:

मैत्रेय कहते हैं: तुमने मुझे मानव–सृष्टि के संबंध में बताया, अब हे ब्राह्मण! मुझे विस्तार से बताओ कि ब्रह्मा ने इसकी सृष्टि किस प्रकार की? मुझे बताओ, उसने कैसे और किस गुण से वर्ण बनाए और ब्राह्मण तथा अन्य के कार्य कौन–कौन से हैं? पराशर ने उत्तर दिया। 3. अपने विचार के अनुसार ब्रह्मा की कामना जगत–सृष्टि की हुई। जिनमें सत्व होता है वे उनके मुख से उत्पन्न हुए, 4. जिनमें रजोगुण होता है, वे उसके वक्ष से जन्में, जिनमें रजोगुण और तमोगुण होता है, वे उनकी जंघाओं से जन्मे। अन्य उनके चरणों से उत्पन्न हुए जिनके मुख्य लक्षण हैं कलुष। इससे वर्ण–व्यवस्था बनी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जो क्रमशः मुख, वक्ष, जंघा और चरणों से बने हैं।"

विष्णु पुराण में ऋग्वैदिक सिद्धांत को सांख्य दर्शन का अनुमोदन प्राप्त है

हरिवंश पुराण में दो सिद्धांत आते हैं। एक के अनुसार वर्णों की उत्पत्ति मनु की एक संतान से हुई:

गृत्समद का पुत्र शुनक था, उससे शौनक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न हुए।

"विताठ पांच पुत्रों के पिता थे। वे थे सुहोत्र, सुहोत्री, गया, गर्ग और कपिल। सुहोत्र के दो पुत्र थे, कासक और राजा गृत्समति। उसके पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य थे।"

दूसरे आख्यान के अनुसार उनकी उत्पत्ति विष्णु से हुई जो ब्रह्मा से प्रकट हुए थे और प्रजापति दक्ष बन गए। यह इस प्रकार है:

"जनमेजय कहता है: "हे ब्राह्मण, मैंने ब्रह्मयुग (वर्णन) सुना है जो आदि युग था। मेरी भी कामना है क्षत्रिय युग के विषय में सारगर्मित और विस्तार से अनेक प्रेक्षणों के आधार यज्ञ के सोदाहरण उल्लेख का सम्पूर्ण विवरण दें। वैशपायन ने उत्तर दिया, "मैं उस युग के विषय में बताता हूँ जिसका यज्ञों के कारण आदर है और जो मुक्ति में अनेक कर्मों की विशिष्टता से सम्पन्न है, जिसका आदर तब के मनुष्यों के कारण किया जाता है। मुक्ति के लिए अबाध कर्म किए जाते थे। ब्रह्म के प्रति चित्त की एकाग्रता थी और संयम था। ब्राह्मणों के उद्देश्य महानतम थे। ब्राह्मण अपने व्यवहार से गौरवान्वित और मर्यादित थे। संयम का जीवन व्यतीत करते थे। ब्राह्मणों के अनुसार अनुशासन था, वे अपने कर्तव्यपालन में त्रुटिहीन थे। उनका ज्ञान अथाह था। वे मननशील थे। तब सहस्रों युग व्यतीत होने पर ब्राह्मणों की सत्ता शिखर पर थी। तब ये मुनि इस विश्व के विलयन में सम्मिलत हुए। ब्रह्मा से विष्णु प्रकट हुए । इन्द्रिय ज्ञान से परे हो गए और ध्यानस्थित हो गए। दक्ष प्रजापति बन गए और अनेक प्राणियों की सृष्टि की। ब्राह्मण को रूपराशि (चन्द्रमा को प्रिय) और अक्षय बनाया गया। क्षत्रियों को नश्वर तत्वों से रचा। एकांतरण से वैश्य बने और धूम्र परिष्करण से शूद्रों को बनाया गया। जब विष्णु वर्णों पर विचार कर रहे थे तो ब्राह्मण को गौर, लाल, पीत तथा नीले रंग से बनाया गया। इस प्रकार विश्व में मानव वर्णों में विभाजित हो गये। उनकी चार पहचान हुई, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। एक स्वरूप अनेक कार्य। दो पैरों पर चलने वाला अत्यंत आश्चर्यजनक शक्तिमान और अपने व्यवसाय में पारंगत। तीन उच्च वर्णों के संस्कारों का वेदों में निर्धारण हुआ। प्राणियों की योगावस्था से ब्रह्मा प्रकट हुए। विष्णु जैसी उसी ध्यानावस्था से भगवान प्रचेतस (दक्ष) अर्थात महान योगी विष्णु अपनी मेधा एवं ऊर्जा से ध्यानावस्था से कर्मक्षेत्र में उतरे। उन्मूलन से शूद्र उपजे, वे संस्कार रहित है इस कारण से शुद्धि संस्कारों में सम्मिलित नहीं हो सकते, न पवित्र विज्ञान से उनका संबंध है, वैसे ही जैसे ईंधन के घर्षण से अग्नि उत्पन्न होती है और लुप्त हो जाती है। उसकी यज्ञ में कोई आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार धरती पर घूमने वाले शूद्र हैं। कुल मिला कर (बलि देने के अतिरिक्त किसी उपयोग के नहीं)। अपने जन्म के कारण, उनका जीवन शुद्धता से वंचित रखा गया है और उनकी अनावश्यकता वेदों से नियत हैं।"

भागवत पुराण में भी वर्णों की उत्पत्ति की व्याख्या है। इसका कथन है:

"कई सहस्र वर्षों के उपरांत अपने कर्मों और प्राकृतिक गुणों से विद्यमान आत्मा ने जल पर उतराते अण्डज को जीवनरूप प्रदान किया। फिर पुरूष ने उसका विखण्डन कर उससे एक सहस्र जंघाएं, चरण, भुजाएं, चक्षु, मुख ओर शीर्ष प्रकट किए। विश्व व्यवस्थापक ने अपने सहयोगी ऋषियों के साथ विश्व की रचना की। उन्होंने अपनी कटि से सात अधो भुवन रचे और ऊर्ध्व मूल से और सात उर्ध्व भुवनों की रचना की। ब्राह्मण पुरूष का मुख था, क्षत्रिय उसकी भुजाएं, वैश्य उसकी जंघाओं से उपजे और शूद्र उस देव पुरूष के चरणों से जन्मे। पृथ्वी उनके पैरों से बनी, वायु उनकी नाभि से। उनके हृदय से स्वर्ग और उनके वक्ष से महालोक बने।

अब अंत में वायु पुराण देखें। यह क्या कहता है? इसके अनुसार मनु ने वर्ण–व्यवस्था रची।

गृत्समद का पुत्र शुनक था। उससे शौनक जन्मा। उसी के परिवार में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न हुए द्विज मानव विभिन्न कर्मों के साथ जन्मे।

VI

कैसी अव्यवस्था है? ब्राह्मण चार वर्णों की उत्पत्ति के विषय में एकरूपता और ठोस प्रमाण क्यों नहीं प्रस्तुत करते?

वर्णों की सृष्टि के विषय में एकमत नहीं है। ऋग्वेद का कथन है कि चार वर्ण प्रजापति ने बनाएं। वह यह नहीं बताता कि कौन से प्रजापति ने। हम यह जानना चाहते हैं कि किस प्रजापति ने वर्ण बनाए क्योंकि प्रजापति अनेक हैं। यह मान भी लें कि प्रजापति ने बनाए तो भी सहमति नहीं है। एक का कहना है कि ब्रह्मा ने बनाए, दूसरे का मत है कश्यप ने। तीसरे का विचार है मनु ने बनाए।

इस प्रश्न पर कि सृष्टा ने– जो भी वह रहा हो, कितने वर्ण बनाए, जिनमें समानता नहीं। ऋग्वेद के अनुसार वर्ण चार थे। परन्तु अन्य अधिकारी विद्वान कहते हैं केवल दो वर्ण बनाए गए। कुछ का विचार है ब्राह्मण और क्षत्रिय और कुछ मानते हैं ब्राह्मण और शूद्र।

संबंधों के विषय में, सृष्टा के मनोरथ के प्रश्न पर ऋग्वेद ने चारों वर्णों में एक के बाद एक असमानतों का नियम निर्धारित किया है जो वर्ण विशेष के उद्गम अंग के महत्व के अनुसार श्रेष्ठ या हीन है। जबकि श्वेत यजुर्वेद, ऋग्वेद के सिद्धांत से सहमत नहीं। ऐसे ही उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराण भी कहते हैं, किन्तु हरिवंश पुराण विस्तार से बताता है कि शूद्र द्विज हैं।

ऐसा लगता है कि इस कुटिलता का कारण चातुर्वर्ण्य की कहानी को सनातन रूप देना है जिसे ब्राह्मणों ने स्थापित परम्पराओं के विपरीत ऋग्वेद से जोड़ दिया।

उद्देश्य क्या था? ब्राह्मणों का इस सिद्धांत रचना के पीछे क्या प्रयोजन था?

साभार – डा. अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय खण्ड–8
पृष्ठ सं. 194 से 207
बाबा साहेब

आधुनिक दलित विमर्श और दलित साहित्यकारों की आत्मकथाएँ

21 वीं शताब्दी में तीन विमर्श देखने को मिलते हैं। जो निम्नानुसार हैं –

1. दलित विमर्श
2. स्त्री विमर्श
3. आदिवासी विमर्श

उपर्युक्त संदर्भ में, मैं दलित विमर्श आधुनिक दलित आत्मकथाओं की चर्चा करूँगी। जो मेरे शोध प्रबंध से सम्बंधित है। दलित आत्मकथाओं में सर्वप्रथम मराठी दलित लेखक 'दयापवार' की 'बलुंत' आत्मकथा है। जिसका 'हिन्दी' अनुवाद 'अछूत' नाम से सन् 1980 में हुआ था। इससे पहले 'डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर' ने 'मेरा बचपन' शीर्षक से जीवन के कुछ प्रसंगो को प्रस्तुत किया था। लगभग इसके बीस वर्ष बाद 'दयापवार' की आत्मकथा 'बलंतु' आई। शायद यही वो पहली आत्मकथा है जिसने पहली बार सामाजिक यथार्थ को सामने लाया। 'दयापवार' ने अपनी आत्मकथा 'अछूत' में ऐसे सच को उजागर किया जिसे लेखक ने खुद भोगा है, मरे हुए जानवरों के शरीर को उधेड़ना उससे माँस काटकर लाना। उसे घरों में टांगकर सुखाना, उसका सड़ना, उसको पकाकर खाना यह है। दलित अभिव्यक्ति। कँवल भारती 'दलित विमर्श' की भूमिका में लिखते हैं, कि –

"यह रोगटें खड़े कर देने वाली यंत्रणा की कहानी है, जिसे लेखक ने स्वयं भोगाना था। मरे हुए जानवरों के शरीर को उधेड़ना उससे माँस काटकर लाना, उसे घरों में टांग कर सुखाना उसका सड़ना उसको पकाकर खाना, इस सबको पढ़ना एक अछूत के जिंदा नरक से गुजरना है।"

स्पष्टतः मैं आधुनिक दलित विमर्श समय सीमा 20 वीं शताब्दी का अन्तिम चरण एवं 21 वीं शताब्दी की प्रथम चरण मान सकती हूँ। शायद इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी। इसके बाद प्र.ई. सोनकांवले की आत्मकथा 'आठवणीचेपंक्षी' का अनुवाद 'यादों के पंक्षी' से हुआ। 'शंकरराव खरात' की आत्मकथा 'तराल–अंतराल' का अनुवाद इसी' शीर्षक से हिन्दी में हुआ। शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथा 'अक्करमाशी' का हिन्दी अनुवाद (1984) 'दोगला' शीर्षक से हुआ। जिसने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, सच के साथ–साथ दलित अस्तित्व के प्रश्न को भारतीय समाज के सामने लाया। वे लिखते हैं, कि –

"मेरी माँ अछूत तो पिता सवर्ण। माँ झोपड़ी में पिता कोठी। पिता जमींदार माँ भूमिहीन। और मैं अक्करमाशी।"

इस कड़ी में 'एम.एन निमगडे', 'धूल का पंक्षी यादों के पंख' आती है। जो दलित जीवन को व्यक्त करती है। इधर हिन्दी में 'मैं भंगी हूँ।' (1981) में प्रकाशित हुई। सन् 1997 में 'ओमप्रकाश बाल्मीकि' की आत्मकथा 'जूठन' का पहला पुस्तकालय संस्करण राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली से हुआ था। 'जूठन' आत्मकथा के संदर्भ में कँवल भारती दलित विमर्श की भूमिका में लिखते हैं, कि–"यदि दलित समस्या वर्ग समस्या हैं। और जन्मना दलितों की सिवा भी लोग दलित है। तो यह व्यवस्था किसने बनाई। कि जूठन उठाने और खाने का काम जन्मना दलितों को ही करना पड़ा।"

दलित होने के कारण ही तो दलितों को यातनाएँ सहनी पड़ी। 'ओमप्रकाश बाल्मीकि' का कहना है कि गुरू के आदर्श रूप की जब कोई बात करता है। तो मुझे वे तमाम शिक्षक याद आ जाते हैं। जो माँ–बहन की गालियाँ देते थे। सुन्दर लड़कों के गाल सहलाते थे। और उन्हें अपने घर उनसे वाहियातपन करते थे। वे लिखते हैं, कि–"एक रोज हेडमास्टर कालीराम ने अपने कमरे में बुलाकर पूछा–'क्या नाम है वे तेरा?' "ओमप्रकाश" मैंने डरते–डरते धीमें स्वर में अपना नाम बताया। हेडमास्टर को देखते ही बच्चे सहम जाते थे। पूरे स्कूल में उनकी दहशत थी।

"चूहड़े का है।" हेडमास्टर का दूसरा सवाल उछला, 'जी' ठीक है– वह जो सामने शीसम का पेड़ है। उस पर चढ़ जा और टहनियाँ तोड़ के झाड़ू बना ले। पत्तों वाली झाड़ू बनाना और पूरे स्कूल को ऐसा चमका दे। जैसा सीसा। तेरा तो ये खानदानी काम है। जा फटाफट लग जा काम पे। आगे लिखते हैं– मैं मैदान की सफाई कर रहा था बाकी बच्चे चैन से पढ़ रहे थे। यह क्रम कुछ दिनों लगातार चला।" "तीसरे दिन मैं कक्षा में जाकर चुपचाप बैठ गया। थोड़ी देर बाद उनकी आवाज सुनाई पड़ी। उठ, ओ चूहड़े के, कहाँ घुस गया अपनी माँ।" उनकी दहाड़ सुनकर मैं थर–थर काँपने लगा। एक त्यागी लड़के ने चिल्लाकर कहाँ 'मास्साब वो बैठा है कोने में।' हेडमास्टर ने लपकर मेरी गर्दन दबोच ली थी। उनकी उँगलियों का दबाव मेरी गर्दन पर बढ़ रहा था। जैसे कोई भेड़िया बकरी के बच्चे को दबोचकर उठा लेता है। कक्षा से खींचकर उसने मुझे बरामदे में ला पटका। चीख कर बोले जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू नहीं तो मिर्ची डालकर स्कूल से बाहर निकाल दूंगा।"

यह गुरू का दलित छात्र के प्रति किया गया दुर्व्यहार है। जो स्कूल व विद्यालयों में दलित छात्र का स्थान निर्धारित करता है। इसके पीछे छुपा कारण परम्परागत सोच है। क्योंकि गुरू भी सामाजिक प्राणी होता है। इसलिए धार्मिक मानसिकता से उभर नहीं पाता। इसके बाद 'दोहरा अभिशाप' कौशल्या वैसंत्री की आत्मकथा का प्रकाशन हुआ। जिसमें लेखिका भारतीय समाज में दलितों की स्थिति को व्यक्त करते हुये लिखती हैं, कि–

"ब्राह्मणों की लड़कियाँ बहुत अच्छे–अच्छे साफ–सुथरे कीमती कपड़े पहनकर आती मेरा बस्ता दो–तीन कपड़ों की पट्टियों को जोड़कर बनाया गया होता था। वे अच्छे टिफिन बाक्स में खाना लेकर आती थी। उसमें कभी पूरियाँ, कभी पराठें, कभी पोहा, कभी सूजी का हलवा, कभी कुछ पकवान रहता था। मैं दीवार की ओर मुँह करके खाना खाती थी। ताकि कोई देख न ले। "मैं अस्पृश्य हूँ, इसका मुझें बहुत दुख होता। डर लगता कहीं मेरी जाति न पूछ ले।"

इस प्रकार दलितों के जीवन में आर्थिक निर्धनता के साथ–साथ जाति भी दुख का कारण है। जो उसके जीवन की उन्नति के सारे मार्ग बंद करती है। 'श्यौराज सिंह' बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' का प्रकाशन हुआ। जो भारतीय समाज में दलित शिशु अवस्था का वर्णन करती है। और यह सिद्ध करती है, कि भारतीय समाज में 'बाल' जीवन कितना असुरक्षित होता है, वे लिखते हैं, कि–"मुझे चौधरी के घर और खेतों के कामों में स्कूल के बाद उनकी रोटी की कीमत चुकानी होती थी। फिर हाँफते–भागते लेट स्कूल पहुँचना होता था। यह दिन–चर्या मेरी उन दिनों मेरे पास हाई–स्कूल तक स्कूल ड्रेस भी नहीं। एक ही जोड़ी कपड़े थे सो स्कूल जाकर उन्हें उतार कर टाँग देता था। और नेकर बनियान में काम करता रहता था। बदलने के लिए दूसरी जोड़ी नहीं होते थे। एक सप्ताह एक गंदे कपड़े स्कूली साथियों से छिपाने मुश्किल होते।"

सूरजपाल की तिरस्कृत आत्मकथा भी यही वेदना और दुख को व्यक्त करती है। वह लिखते हैं। कि लोग मजबूरी बश 'सरनेम' बदल लेते हैं– "दिल्ली के भगत सिंह कालेज में बी.ए. करते समय ऐसे हालात से गुजरना पड़ा। जब लगा कि इन हालातों पर काबू नहीं पा सकता तो समझौता कर लेना पड़ा। मैंने अपने नाम के साथ गोत्र 'चौहान' प्रयोग करना शुरू कर दिया अब कालेज के साथी मुझे राजपूत या ठाकूर समझते।"

'मोहनदास नैमिशराय' भी अपने–अपने पिंजरे में लिखते हैं। कि हमारे गाँव मेरठ में भी दलितों की यही स्थिति थी। लोग उन्हें सम्मान के साथ नहीं बुलाते थे। बल्कि घृणावश वे हमारी जाति से हमें संबोधित करते थे। वे लिखते है, कि–"हमारी जाति के लोगों को स्त्री हो तो चमारि, पुरूष हो तो चमार कह कर बुलाते थे। मंदिर और सवर्णों के लिए हम शूद्र थे। अछूत थे। दलित थे। पर इन्सान न थे। हमारी छाया भी उनके लिए अपवित्र थी।

तुलसीराम की 'मुर्दहिया' भी यही सच व्यक्त करती है। 'मुर्दहिया' का 'मणिका' (भाग–2) भी सन् 2015 में प्रकाशित हुआ है। तुलसीराम भी अपने जीवन की उन घटनाओं को व्यक्त करते हैं। जो वर्णव्यवस्था के 'चतुर्थवर्ण शूद्र जाति को सहन करने पड़ते हैं। बेगार प्रथा के चलते उन्हें व उनके समाज को ऐसा भोजन तलाशना पड़ता है। जो खाने योग्य नहीं होता था। फिर भी खाना पड़ता था, कारण बेगार के चलते आर्थिक निर्धनता। लेखक लिखते हैं, कि– "दलित औरतें और बच्चे प्रायः 'मुर्दहिया' के जंगलों तथा गाँव के ताल से खाने योग्य वनस्पतियों को ढूढ़ने निकल जाते। जंगल में तो कुछ भी नहीं मिलता किन्तु झाड़ियों में चूहों को मारकर लाते। और पकाकर खाते थे।

इसी कड़ी में एम. एल शहारे की आत्मकथा 'यादों के झरोखे' डी.आर. जाटव की 'मेरा सफर मेरे मंजिल', राजपाल की 'राजसतसई' और सुशीला टाक भौरे की 'शिकंजे का दर्द', रूपनारायण सोनकर की 'नागफनी' उल्लेखनीय आत्मकथाएँ हैं। रूपनारायण सोनकर ने भी दलित जीवन को जिया है। इसलिए उनकी आत्मकथा में क्रान्तिकारी विचार जन्म लेते हैं। वे लिखते हैं, कि – ऐसे धर्म ग्रंथों को टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिए जो समाज में भेदभाव फैलाते हैं। 'रामचरित–मानस' के टुकड़े–टुकड़े प्रंसग' में लेखक ने इसे सिद्ध किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष कह सकते है कि दलित आत्मकथाएँ 'वर्णव्यवस्था' का विरोध करती है। क्योंकि जाति व्यवस्था ने न सिर्फ जन्म से जाति के आधार पर काम निश्चित कर दिया है। बल्कि इसी ने जन्म से ताउम्र दलितों के नसीब में दरिद्रता भुखमरी अस्वच्छता व अंधविश्वास का वातावरण भी लिख दिया है। वास्तव में यह आत्मकथाएँ सिद्ध करती है कि जाति व्यवस्था दुश्चक्र है। जिसमें प्रत्येक स्थित दूसरी स्थित का कारण भी है। परिणाम भी परन्तु सबसे बड़ा कारण जाति है।

जाति के कारण ही दलितों को मंदिर जाने से रोका गया। शिक्षा पाने से रोका गया। पानी पीने से रोका गया। यही वजह है। जो दलित साहित्य को मार्क्सवादी और प्रगतिशील साहित्य से अलग करता है। यह आत्मकथाएँ समाज में समानता स्वतंत्रता बंधुत्व की मांग करती हैं। इसलिए इनमें मुक्ति की छटपटाहट प्रमुख है।

नाम – केशर अहिरवार
पता – छतरपुर (म० प्र०)
मो० – 9981343069

मानव की जाति एक

सामाजिक विभाजन इसी देश की विशेषता नहीं है। यह प्रत्येक देश में रहा है, इसके आधार भले ही भिन्न – भिन्न हों। यही नहीं बदलते आधारों के कारण, एक ही देश के विभिनन कालों में विभिन्न वर्ग रहे हैं। भारत के सुन्दर अतीत में वर्ण के नाम पर वर्ग बने और बाद में जातियों के आधार पर। विभिन्न जातियों के कारण ऊंच – नीच का भेद – भाव उत्पन्न हुआ। यही नहीं अगम्यता और अस्पृश्यता जैसी भयंकर सामाजिक बुराइयां पैदा हुईं। और इन बुराइयों से बचने के लिए, कारण कुछ भी हों, लोगों ने रास्ता भी निकाल लिया।

भारत में मध्यकाल में बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया और आधुनिक युग में बहुतों ने, जिनमें बुद्धिजीवी भी थे, ईसाई और बौद्ध धर्म स्वीकार किया। 9वीं सदी में स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जी ने, और इस सदी में महात्मा गांधी ने वर्णाश्रम धर्म की नई व्याख्या उपस्थित करते हुए कहा था कि इसमें कोई बड़ा – छोटा नहीं बल्कि सभी बराबर हैं। यदि कोई बड़ा – छोटा है तो गुण कर्म से जन्म से नहीं। नारायण गुरु ने चार वर्ण को भी अस्वीकार कर दिया। उनका सिद्धान्त था, (जिस पर मृत्यु) तक वह अडिग रहे, और प्रचार करते रहे) कि सभी मानव विभिन्न नस्लों, रंगों, भाषाओं और वेशभूषा के बावजूद एक ही जाति के हैं। इसकी सत्यता और सम्भावनाओं को देखकर ही विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों ने नारायण गुरु का साथ दिया।

इस आदर्श सिद्धान्त को अमली जामा पहनाने के लिए नारायण गुरु सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति थे। बचपन में, जैसा कि हम देख चुके हैं, वह पुलया बच्चों को छूकर दौड़े आते थे और रसोई में काम कर रही महिलाओं को छू देते। और इस तरह कई बार उन्हें स्नान करने के लिए मजबूर कर देते थे। यहीं नहीं वह अछूतों के घरों में जाते, उनके कामों में हाथ बटाते और उनके साथ भोजन करते थे। बाद में तो वह ईसाइयों, मुसलमानों सभी के साथ रहे और एक थाली में उनके साथ भोजन किया। अरुवीपुरम में जब अस्थायी मन्दिर के स्थान पर स्थायी मन्दिर बन कर तैयार हुआ तो नारायण गुरु ने एक शिलाखण्ड पर ये शब्द खुदवाए –

"यह एक आदर्श निवास,
जहां रहते मानव भ्रातसम,
धार्मिक द्वेषभाव और,
जातीय संकीर्णताओं से मुक्त हो।"

नारायण गुरु की 'जाति मीमांसा' शीर्षक से एक कविता है। इसमें उन्होंने वास्तविकता, तर्क और इतिहास के आधार पर मानव की एक जाति बताई है। तीन प्रथम पदों में नारायण गुरु ने वास्तविक आधार पर मानव को एक बताते हुए आगे कहा है कि जिस प्रकार सभी गायें एक जैसी ही हैं, उसी तरह मानव की शक्ल – सूरत, खून, दिमाग भी एक जैसा ही है। प्राणी अपनी ही जाति में सन्तान उत्पन्न कर सकता है। फिर मानव की एक जाति होने के क्या सन्देह है। कविता के चौथे पद में उन्होंने बताया है कि मानव ब्राह्मण हो या अछूत, उसी मानव जाति का वंशज है। अतः मानव – मानव में जाति के नाम पर फर्क कहां है। इतिहास का सहारा लेकर नारायण गुरु ने कहा है कि ऋषि पराशर चांडाल के पुत्र थे और उनके यशस्वी पुत्र व्यास मल्लाह की क्वांरी लड़की से पैदा हुए थे। फिर जाति के आधार पर मानव – मानव में भेद कैसा ? इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक 'दि हिन्दू बियु ऑफ लाइफ' में कहा है कि "वशिष्ट वेश्या के पुत्र थे, व्यास मल्लाह की पुत्री के पुत्र थे और पराशर चांडाल लड़की के। महत्व आचरण का है जन्म का नहीं।"

नारायण गुरु जीवन भर इस आदर्श सिद्धान्त का पालन करते रहे और दूसरों से पालन कराते रहे। उन्होंने दो संगठन स्थापित किए – श्री नारायण धर्म परिपालन योगम तथा श्री नारायण धर्म संघम ट्रस्ट । दोनों ही उनके जीवन काल में सब के लिए खुले थे। 1927 में नारायण गुरु ने एस0 एन0 डी0 पी0 योगम को दो सन्देश दिए थे। पहले में अन्य बातों के साथ – साथ उन्होंने कहा था, "हमारा संगठन सब को जोड़ेगा।" दूसरे संदेश में कहा था, "सभी धर्म और जाति के भेदभाव के बिना, योगम में सम्मिलित हो सकते हैं।" धर्म संघ सन्यासियों का संगठन है और आज भी कोई सन्यासी चाहे, सन्यास ग्रहण करने के पहले, उसकी कोई भी जाति हो, इसमें प्रवेश ले सकता हैं। एस0 एन0 डी0 पी0 योगम का झुकाव नारायण गुरु की मृत्यु के बाद राजनीति की ओर हो गया है। सदस्यों की संख्या के बल पर ही सही, वह आज इढ़वा जाति का एक सशक्त और संगठित संगठन बन गया है।

मन्दिर का नारायण गुरु के जीवन और कार्यों में बहुत बड़ा महत्व है। इनके द्वारा स्थापित सभी मन्दिर सबके लिए खुले थे। जहां किसी मन्दिर में अछूतों के प्रवेश पर उन्हें किसी प्रकार का विरोध दिखा, नारायण गुरु ने दोषी व्यक्तियों को डांट – फटकार सुनाई। अन्य संस्थाओं – स्कूल, पुस्तकालय, मठ में बरते गए भेदभाव के प्रति भी उनका यह रुख था। स्वामी धर्मतीर्थ ने नारायण गुरु की जीवनी 'प्रोफेट आफ पीस' में उनका एक कथन उद्धृत किया है जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है, "क्या यह समुदाय मैंने आप लोगों को इसलिए दिया है कि आप अपने लिए या अपने समान स्थिति के दूसरों के लिए जाति का जेल खड़ा कर लो जिससे निकालना मेरा उद्देश्य रहा है ? क्या यह सभा मैंने इसलिए आयोजित की है कि आप इसकी चारदीवारी के भीतर अपने को बन्द कर लो ? नहीं ! सभी दरवाजे खोल दो ताकि सारी दुनिया इसमें प्रवेश कर सके।

अपने अनुयायियों के लिए उदाहरण पेश करने के इरादे से नारायण गुरु ने एक अछूत को अपना रसोइया रखा था। अद्वैतआश्रम (अलवये) में पढ़ रहे पुलया लड़के खाना बनाते और परोसते भी थे। जब कभी कोई ऐसा मेहमान, जिसके मन में भेदभाव की भावना होती, वहां खाना खाने आता तो नारायण गुरु जान – बूझकर उससे खाना परोसने वाले लड़कों की जाति बताते थे। भले ही उनके मन में दुर्भाव हों पर नारायण गुरु के सामने जुबान खोलने की किसी की मजाल नहीं थी।

पुलया लड़के खाना बनाते और परोसते भी थे। जब कभी कोई ऐसा मेहमान, जिसके मन में भेदभाव की भावना होती, वहां खाना खाने आता तो नारायण गुरु जान – बूझकर उससे खाना परोसने वाले लड़कों की जाति बताते थे। भले ही उनके मन में दुर्भाव हों पर नारायण गुरु के सामने जुबान खोलने की किसी की मजाल नहीं थी।

नारायण गुरु के आदर्श सिद्धान्त 'मानव की एक जाति' को केरल के कोने – कोने में ले जाने और उसे साकार रूप देने में, नारायण गुरु के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका एस0 अय्यपन ने निभाई। त्रिवेन्द्रम में अपनी शिक्षा समाप्त कर कोचीन लौटते ही वह काम में जुट गए। उन्होंने बताया कि गुरु के इस आदर्श सिद्धान्त के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा जातीयता, अस्पृश्यता, अन्धविश्वास और पुरातन प्रथाएं हैं। वह चाहते थे और प्रयत्नशील रहे कि सभी जातियां, सर्वप्रथम अवर्ण, साथ – साथ मिलकर रहें, भोजन करें और परस्पर शादी ब्याह करें। इसके लिए उन्होंने पहले – पहल सहभोज की शुरूआत की– बड़ी जातियों के साथ नहीं बल्कि निम्न जातियों के साथ। बहुत मुश्किल से पहले दो पुलया लड़के इस काम में शरीक हुए। इस पर इढ़वा जाति के अनुदार वर्ग में तहलका मच गया। अय्यपन को युलयान अय्यपन कहा जाने लगा। गलियां ही नहीं दी गईं बल्कि उन पर हमले भी हुए। जब एक दिन उनकी नारायण गुरु से मुलाकात हुई तो उन्होंने सान्त्वाना देते हुए कहा कि एक दिन यह सशक्त और व्यापक आन्दोलन का रूप अवश्य पकड़ेगा। अतः अत्याचार करने वालों को ईसा की तरह ही क्षमा करते जाना।

पर जब कुछ लोग अय्यपन पर दोष मढ़ने लगे कि यह सब वह अपने मन से कर रहे हैं, उसमें नारायण गुरु की सहमति नहीं है, तो वह उनसे मिले और यह सब कह सुनाया। नारायण गुरु ने तुरन्त कागज और कलम मंगाई और निम्नलिखित सन्देश दिया :–

"व्यक्ति की वेशभूषा, रीति – रिवाज, जाति या धर्म जो भी हो क्योंकि वे सब मानव हैं, अतः उनके साथ बैठकर खाने या उनके बीच अन्तर्जातीय विवाह में कोई भी आपत्ति नहीं हो सकती।

अय्यपन ने इस सन्देश की हजारो कापियां छपवाकर पूरे केरल में बंटवाया। उन्होंने 1917 में केरल सहोदरन संघ की स्थापना की और 'सहोदरन' नाम के एक पत्रिका निकाली। 1921 में अलवये अद्वैत आश्रम में अय्यपन ने सहोदरन समाज का एक सम्मेलन भी आयोजित किया। नारायण गुरु उसमें स्वयं उपस्थित हुए थे।

सहोदरन की अनेकानेक गतिविधियों के फलस्वरूप केरल अपनी पहले की अनुदारता की ओर लौट नहीं सका।

साभार : भारत के संत – भाग 1
देवेन्द्र कुमार बैसन्तरी

जन्म दिन पर विशेष 26 जुलाई

छत्रपति साहू महाराज

हमारे देश मे अनेक व्यक्तित्व ऐसे हुए है जो सुविधाओं में पले, पर जैसे – जैसे बचपन से उन्होंने जवानी की ओर कदम रखा, वैसे – वैसे उन्होंने अभाव में रह रहे लोगों की पीड़ा तथा दर्द को समझा, महसूस किया और उनके लिए कार्य कर समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर दिखाया। ऐसे ही महापुरुषों में से थे छत्रपति साहू महाराजजी, जिन्होंने राजा होते हुए भी हर समय दलित तथा शोषित वर्ग से अपना रिश्ता बनाए रखा।

साहू महाराज का जन्म 26 जुलाई 1874 में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रमंत जयसिंह राव आबा साहब घाटगे और माता का नाम राधाबाई था। उनके बचपन का नाम यशवंतराव था।

साहू महाराज की शिक्षा राजकोट के 'राजकुमार महाविद्यालय' में हुई। राजकोट की शिक्षा समाप्त कर आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए 1890 से 1894 तक वे धारवाड़ में रहे। उन्हें अंग्रेजी और इतिहास आदि अन्य विषयों से राजकाज चलाने की भी शिक्षा दी गई। वे पढ़ाई – लिखाई में कुशल थे। साथ ही शासन सम्बन्धी मामलों को जल्दी ही समझ लिया था।

छत्रपति साहू महाराज 1894 में कोल्हापुर रियासत के राजा हुए। उन दिनों समाज में जातिवाद का बोलबाला था। समाज में जाति, धर्म तथा वर्गों के आधार पर विषमता बढ़ रही थी। समाज का एक वर्ग पिस रहा था और दूसरा उस पर हावी था। साहू महाराज ने इन सबका विश्लेषण करने के बाद दलितोद्धार का कदम उठाया। उन्होंने शूद्रातिशूद्र वर्ग को ऊपर उठाने के लिए एक योजना बनाई और उसे कार्यरूप में लाए। इसके लिए उन्होंने दलित तथा पिछड़ी जातियों के लोगों के लिए स्कूल – कालेजों की स्थापना के साथ – साथ उनके लिए छात्रालयों की स्थापना की। समाज में जो वर्ग हजारों वर्षों से सताया जा रहा था, जब उसमें परिवर्तन होने लगा तो उच्च वर्ग को बुरा लगा। वे महाराज को अपना शत्रु समझने लगे। परिणाम यह हुआ कि साहू महाराज की तथाकथित सवर्ण जाति के लोग एक स्वर में निन्दा करने लगे। स्वयं राजपुरोहित ने कहा– "आप शूद्र है और शूद्र को वेद मन्त्र सुनने का अधिकार नहीं है।" उस समय कोल्हापुर के राजपुरोहित का समर्थन शंकराचार्य ने भी किया था। साहू महाराज ने बहुजन समाज को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इन सबका डटकर मुकाबला किया।

समाज में जातिभेद और विषमता एक बड़ा कारण रहा है– एक वर्ग का मान – सम्मान हो तथा दूसरे का अपमान। उन्होंने अमानवीय आधार पर चल रही परम्परा पर वार किया और जन – जन में प्रचार के लिए आन्दोलन चलाया।

1911 में साहू महाराज ने अपने संरक्षण में 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना की। उन्होंने कोल्हापुर में 'सत्य शोधक पाठशाला' चलाई। गांव – गांव में सत्य शोधक समाज के सम्मेलन आयोजित किए। यही नहीं दलित समाज के विद्यार्थियों को धर्मज्ञान प्राप्त करने की स्वस्थ्य परम्परा का विकास किया। ध्यान रहे कि 1873 में महाराष्ट्र में महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना की थी। जात – पांत, ऊँच – नीच की मानवद्रोही और समाजद्रोही विचार प्रणाली के विरूद्ध मानव और मानव के बीच समता का समर्थन करने वाला यह आन्दोलन था। साहू महाराज ने इसी आन्दोलन को अपनी सियासत में आगे बढ़ाया था।

1919 में डा0 अम्बेडकर साहू महाराज के सम्पर्क में आए। उनकी सहायता से ही 31 जनवरी 1920 मे बाबा साहेब ने मूकनायक (गूंगो का नेता) मराठी पाक्षिक समाचार – पत्र आरम्भ किया।

21 मार्च 1920 का कोल्हापुर रियासत के माणगांव में डा0 अम्बेडकर की अध्यक्षता में दलितों का एक सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में साहू महाराज ने भाषण देते हुए कहा था– "भाइयों, आज आपको डा0 अम्बेडकर के रूप में अपना रक्षक नेता मिला। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डा0 अम्बेडकर आपकी गुलामी की बेड़ियां तोड़ देंगे। समय आएगा और डा0 अम्बेडकर अखिल भारत के प्रथम श्रेणी के नेता के रूप में चमक उठेंगे।" उस समय कौन जानता था कि साहू महाराज की भविष्यवाणी एक दिन सही साबित होगी।

15 अप्रैल 1920 को साहू महाराज के सहयोग से ही नासिक में 'विद्या वसतीगृह' की स्थापना हुई। इसकी स्थापना करते हुए उन्होंने कहा था– "बहुत से लोगों का कहना है कि जाति भेद बुरा नहीं, पर जातिद्वेष नहीं होना चाहिए।" ऐसा विचार रखने वाले लोगों को समझाते हुए उन्होंने कहा कि जातिभेद का कार्य ही जातिद्वेष पैदा करता है। इसलिए सबसे पहले समाप्त करना चाहिए।

साहू महाराज सम्पूर्ण भारतीय समाज में परिवर्तन देखना चाहते थे। एक ओर उन्होंने जहां

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

करने का कानून भी 1912 में बनाया था। उन्होंने पुनर्विवाह के लिए भी कानून बनाया। इस तरह से उन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी क्रान्तिकारी कानून बनाकर समाज में परिवर्तन होने की परिस्थितियों की संरचना में सहयोग दिया। उनका किसी जाति विशेष के लोगों से कोई द्वेष न था लेकिन वे समाज में स्वस्थ्य मूल्यों का निर्माण करना चाहते थे। इसलिए ही शायद तत्कालीन समय में उच्च वर्ग के कुछ लोग उनके विरोधी हो गए थे उन्हें अपना शत्रु मानने लगे थे। पर साहू महाराज किसी के शत्रु न थे। न ही किसी को शत्रु बनाने में रुचि थी। वे तो मानव – मानव के बीच प्यार और भाईचारे के अंकुर पैदा करना चाहते थे। जिसमें किसी सीमा तक वे सफल भी हुए।

निश्चित ही साहू महाराज ने भारतीय समाज से विषमता समाप्त करने तथा समता और बराबरी के मानवीय सिद्धान्त को लागू कराने के लिए जीवनभर जो संघर्ष किए, वे हमेशा – हमेशा के लिए याद किए जायेंगे तथा समाज की भावी पीढ़ी उनसे हर एक युग में प्रेरणा भी लेती रहेगी। उन्होंने जातिभेद समाप्त करने के लिए एक ऐतिहासिक कार्य किया था। यही नहीं, समय – समय पर वे बाबा साहब डा0 अम्बेडकर को हर तरह से सहयोग भी किया करते थे। उनके मन में बहुजन समाज के लिए गहरा लगाव था। वैसे वे हर समाज की प्रगति देखना चाहते थे। पर जो भी कारणवश पिछड़ गए थे उन्हें आगे लाना भी वे अपना फर्ज समझते थे।

10 मई 1922 को उनका निधन हो गया। स्वयं बाबा साहब डा0 अम्बेडकर को उनके निधन पर बहुत दुःख हुआ था। क्योंकि वे जानते थे कि इस तरह के महापुरूष बिरले ही जन्म लेते हैं। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो समाज के लिए जीते हैं। साहू महाराज उनमें से ही एक थे, जो जीवनपर्यंत समाज में समता और बराबरी देखने के लिए संघर्ष करते रहे।

सामार : समता की ओर
मोहनदास नैमिशराय

जिन लोगों की जन आन्दोलन में रुचि है उन्हें केवल धार्मिक दृष्टिकोण अपनाना छोड़ देना चाहिए उन्हें भारत के लोगों के प्रति सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण भी अपनाना चाहिए ।

–भीमराव अम्बेडकर

छत्रपति शाहूजी महाराज

छत्रपति साहू जी महाराज

के जन्म दिवस के अवसर पर

हार्दिक श्रृद्धांजलि

विद्या बिन मति गई, मति बिन नीति गई, नीति बिन गति गई, गति बिन धन गया धन बिन शूद्र पतित हुए इतना घोर अनर्थ मात्र अविद्या के कारण ही हुआ।

–महात्मा ज्योतिबा फूले